प्राणाचार्य®

आरोग्यम्

अयुर्वेदिक स्वास्थ्य पत्रिका

आरोग्य ही जीवन है

संपादकीय

प्रिय पाठक बंधु

जय आयुर्वेद

आप सभी को धन्वन्तरि त्रयोदशी और दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

ईश्वर की कृपा से आप और आपका परिवार सुखी और समृद्ध रहे। सम्मानित आयुर्वेदिक चिकित्सक बंधुओं पिछले कुछ समय से कोरोना वायरस महामारी के कारण हम प्राणाचार्य आरोग्यम पत्रिका प्रकाशित कर आप तक नहीं पहुँचा पाये। आपको हर्ष के साथ सूचित कर रहे हैं कि आपकी प्रिय पत्रिका प्राणाचार्य आरोग्यम पुनः प्रकाशित करने की योजना तैयार है । इसे हम ई पत्रिका के रूप में आपके समक्ष धन्वन्तरि त्रयोदशी 10 नवम्बर 2023 के दिन प्रस्तुत करेंगे जिसमें आयुर्वेद में हो रहे नित्य नये अनुसंधान, विभिन्न रोगों का आयुर्वेद के द्वारा उपचार, अत्यंत प्रभाव पूर्ण शास्त्रोक्त औषधियों का वर्णन, दुर्लभ जड़ी बुटियों का वर्णन करने की योजना है । यह पत्रिका पूर्ण रूप से निःशुल्क रहेगी और आपके whatsapp पर मासिक रूप से हम इसको भेजेंगे और हमारी website पर व विभिन्न पत्रिकाओं के चैनल पर हम इसे आपको उपलब्ध कराने की कोशिश करेंगे । यदि आप अपने मित्र और किसी मिलने वालों को भी पत्रिका का लाभ देना चाहते हैं तो आप हमे उनका मोबाइल नंबर उपलब्ध करा सकते है।

यह अंक आपको कैसा लगा हमे अवश्य सूचित करे। पत्रिका के उत्थान हेतु कोई भी विचार आपके पास हो तो हमे सूचित करे ।

इसी प्रकार स्नेह की आशा में आपका आभारी

वैद्य स्वदेश कुमार अग्रवाल
बी. ए. एम. एस. आयुर्वेदाचार्य

संपादक, मालिक, मुद्रक एवं प्रकाशक
वैद्य स्वदेश कुमार अग्रवाल

प्रबन्ध-संपादक
वैद्य नीरज गोयल

सह-संपादक
पंकज अग्रवाल

पंजीकृत कार्यालय :
प्राणाचार्य आरोग्यम्
नई छिपैटी, चामड़ गेट, अग्रवाल धर्मशाला के पास
हाथरस-204101 मो. 9412276076, 9719996848

प्रबन्ध कार्यालय :
प्राणाचार्य भवन आयुर्वेदिक संस्थान
वैद्य नगरी, विजयगढ़-202170
फोन : 9412277250, 971616101
Web. www.pranacharya.com

धनवन्तरि भगवान का अवतरण एवं धनवन्तरि त्रियोदशी पूजन विधि

भगवान धनवन्तरि को अयुर्वेद के देवता के रूप में माना जाता है। आयुर्वेद के सभी कार्यो में, शुभ कार्यो में, अनेक चिकित्सकीय कार्यो में भगवान धन्वन्तारि की पूजा अर्चना की जाती है।

हर वर्ष अश्वयुजा बहुला त्रियोदशी के शुभ दिन जो की दिवाली से पहले होता है उस दिन को धन्वंतरि जयंती के रूप में मनाया जाता है। जिसे धनतेरस भी कहा जाता है, इस दिन भगवान धन्वन्तरि जी के समक्ष हवन होता है और पूजा अर्चना की जाती है

भगवान धनवन्तरि अवतरण:

भगवान धन्वन्तरि समूद्र मंथन के समय हाथ में अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। उन्हे भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। वह आयुर्वेदिक चिकित्सा विज्ञान के मर्मज्ञ थे। समुद्र मंथन के समय भगवान धन्वन्तरि प्रकट हुए । वह जवान और मजबूत शरीर वाले थे, उनकी छाती बहुत चौड़ी थी और उनका रंग नीला-काला था। उनकी भुजाऐ मजबूत थी, आंखे लाल थी। वह चमकीले पीले रंग के कपड़े पहने हुए थे। उनके हाथ में एक शंख, जोंक, उपचार करने वाली जड़ी-बूटियाँ, एक चक्र और लंबे समय से मांग किया गया अमृत का बर्तन था।

मंथन के समय भगवान विष्णु ने भविष्यवाणी की थी कि भगवान धनवन्तरि आयुर्वेद का विज्ञान सिखाने के लिये संसार में फिर से प्रकट होंगे। और उन्होने वैसा ही किया जब भगवान इन्द्र ने मानवता को दर्द और बीमारी से इतना पीड़ित देखा, तो उन्होने भगवान धन्वन्तरि से भौतिक संसार में उतरने और मानव जाति को आयुर्वेद सिखाने का अनुरोध किया।

धन्वन्तरि त्रियोदशी पूजन विधि:

सांयकाल होते ही स्नान ध्यान करने के बाद सबसे पहले भगवान श्री गणेश की और उसके बाद माँ लक्ष्मी और कुबेर देवता के बाद भगवान धन्वन्तरि की विधि-विधान से पूजा करें। इसके लिए सबसे पहले एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर भगवान धन्वन्तरि की मूर्ति या चित्र को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर रखें। और उसके बाद उनका फल-फूल, रोली, अक्षत, सुगंध, चन्दन, पान, पुष्प और विभिन्न जड़ी-बूटियों आदि चढ़ाकर उन्हे खीर का भोग लगाऐं, इसके बाद भगवान धन्वंतरि से सुख एवं आयोग्य का आर्शीवाद पाने के लिए कमलगट्टे की माला से' ॐ धन्वंतराये नम:' मंत्र का जाप करें।

वैध शशांक अग्रवाल
बी.ए.एम.एस (आयुर्वेदाचार्य)
प्राणाचार्य आरोग्यम (विजयगढ़)
मो. 9719996848

शीतऋतु का कष्टदायक रोग

काली खाँसी

शशि भूषण शलभ
चन्द्रप्रिया अपार्टमेंट, फ्लैट नं. 14,
पॉकेट ए-3, सेक्टर-8, रोहिणी दिल्ली-110085
मोबा: 08447013666

शीतऋतु में अधिकांश छोटे बच्चे, सर्दी-जुकाम से पीड़ित होते है। सर्दी-जुकाम के चलते खांसी होना साधारण बात होती है जब खांसी की चिकित्सा में विलम्ब किया जाता है। खांसी उग्र रूप धारण करके काली खांसी में परिवर्तित हो जाती है।

काली खांसी को जन साधारण कुकर खांसी (कुत्ता खांसी) कहा जाता है। काली खांसी संक्रामक रोग होता है। एक रोगी बच्चों से दूसरे बच्चों को बहुत जल्दी काली खांसी का संक्रमण होता है। कक्षा या परिवार में किसी एक बच्चे को कालीखांसी होने पर दूसरे बच्चे भी शीघ्र काली खांसी के शिकार बनते हैं।

एलोपैथी चिकित्सा के विशेषज्ञो के अनुसार कालीखांसी की उत्पत्ति बोर्डेटेला पर्टभूसिस जीवाणुओं द्वारा होती है यह जीवाणु रोगी बच्चे के मुंह और नाक में छिपे रहते हैं। रोगी बच्चे के खांसते-छींकते जीवाणु वायु में उड़कर श्वास के साथ शरीर में पहुंचकर तुरन्त कालीखांसी उत्पन्न करती है।

कालीखांसी की उत्पत्ति 6 महीने से 10-12 वर्ष के बच्चों को अधिक होती है। लड़कों की अपेक्षा लड़कियां अधिक कालीखांसी रोग से पीड़ित होती हैं।

काली खांसी के लक्षण - कालीखांसी अत्यन्त कष्टदायक रोग होता है। एक बार खांसी का दौरा प्रारम्भ होने पर निरन्तर चलता है। खांसते-खांसते रोगी का चेहरा लाल हो जाता है मुंह से लार निकलने लगती है। रोगी बच्चे को वमन हो जाने के बाद खांसी का प्रकोप कुछ शांत होता है। लेकिन कुछ देर के बाद खांसी का दौरा होने और वमन होने से रोगी बच्चे बहुत भयभीत हो जाते हैं। कुछ बच्चे रोने लगते हैं और रोने पर गला अवरुद्ध होने पर पुन: खांसी का दौरा प्रारम्भ हो जाता है। वार-वार वमन होने से रोगी बच्चे बहुत कमजोर हो जाते हैं।

काली खांसी में खांसी का प्रकोप इतना अधिक होता है कि कुछ खाते-पीते या जोर से बोलते ही खांसी का दौरा प्रारम्भ होता है। कई बार तो बच्चे को औषधि खिलाने पर खांसी होने पर खांसी के कारण वमन के साथ औषधि भी निकल जाती है। ऐसे में औषधि का प्रभाव नहीं हो पाता। औषधि का प्रभाव नहीं हो पाने के कारण काली खांसी का प्रकोप कम नहीं हो पाता।

ऐसी भयाभय स्थिति को जनसाधारण में दैवी प्रकोप, भूत-प्रेत बाधा या टोना-टोटका समझ लिया जाता है, कुछ माता-पिता ऐसी स्थिति में बच्चे को ओझा या तांत्रिक के पास ले जाते हैं।

कालीखांसी का रोग एक समयावधि में नष्ट होता है। दो-तीन सप्ताह में काली खांसी स्वयं नष्ट हो जाती है लेकिन कालीखांसी के चलते आयुर्वेदिक औषधियां सेवन करने से जल्दी आराम हो जाता है। रोगी बच्चे निर्बल होने से बचते हैं।

आयुर्वेदिक चिकित्सा -

आधुनिक चिकित्सा में शिशु को जन्म के एक महीने के भीतर ट्रिपल एंटीजेन इंजेक्शन दिया जाता है।

डिप्थीरिया रोगों से सुरक्षित रहता है।

• प्रवालपिष्टी और श्रृंग भस्म मिलाकर मधु के साथ दिन में दो बार चटाने से कालीखांसी का प्रकोप नष्ट होता है।

• मोरपंख के चन्द्र आकार के पंख जलाकर भस्म बनाएं। पंखों की भस्म में भुना हुआ सुहागा मिलाकर रखें। दिन में दो तीन बार मधु के साथ मिश्रण चटाने से काली खांसी नष्ट होती है।

• कास कुठार रस की एक गोली खरल में पीसकर दो बराबर मात्रा में बांटकर एक-एक भाग सुबह-शाम अदरक के रस और मधु मिलाकर चटाने से काली खांसी का अंत होता है।

• श्वासकुठार रस आधी रत्ती और प्रवाल भस्म आधी रत्ती में मिलाकर अदरक के रस और मधु के साथ सुबह-शाम चटाने से काली खांसी नष्ट होती है।

• अभ्रक भस्म, श्रृंग भस्म आधी-आधी रत्ती मात्रा में लेकर एक रत्ती शु0 टंकण मिलाकर दिन में दो-तीन बार मधु के साथ सेवन करने से काली खांसी का प्रकोप नष्ट होता है।

• सितोपलादि चूर्ण दो-दो ग्राम मात्रा में मधु मिलाकर दिन में दो-तीन बार चटाने से खांसी का प्रकोप कम होता है।

• गोदन्ती हरताल भस्म आधे ग्राम मात्रा में वासा के रस और मधु मिलाकर दिन में दो बार चटाने से कालीखांसी का निवारण होता है। खांसी का वेग कम होता है।

• कस्तूरी भैरव रस की एक गोली खरल में पीसकर दो भागों में बराबर बांट कर सुबह-शाम अदरक के रस और मधु मिलाकर चटाने से काली खांसी में बहुत लाभ होता है।

• काली खांसी में रोगी बच्चे को भाप का वफारा देने से बहुत लाभ होता है। भाप का वफारा बहुत सावधानी से इस्तेमाल करें।

• रात्रि में सोते समय बिस्तर पर जाने पर बच्चे की छाती और कमर पर सेंन्धवादि तैल मलने से खांसी का प्रकोप कम होता है।

• लौंग के तवे पर भूनकर उनको कूटकर बारीक चूर्ण बनाकर रखें। लौंग के चूर्ण में मधु मिलाकर चटाने से खांसी का प्रकोप कम होता है।

आहार - विहार

रोगी बच्चे को नंगे पांव, नंगे सिर, घूमने फिरने नहीं दें, रोगी बच्चे को शीतल कोई चीज नहीं खिलायें। गाजर, मूली, अनार आदि शीतल सब्जी व फलों से परहेज कराएं। उड़द की दाल व चावल भी बच्चे को हानि पहुंचाते हैं।

शीत ऋतु में रोगी बच्चे को पर्याप्त ऊनी वस्त्र पहनाएं। बच्चे को शीतल वायु के वातावरण में बाहर नहीं जाने दें। घी, तेल से बने खाद्य पदार्थों का सेवन करने से बच्चे को अलग रखें। शीत ऋतु में बच्चे को धूप में बैठाने से बहुत लाभ होता है।

प्राणाचार्य® शास्त्रोक्त एवं पेटेण्ट आयुर्वेदिक औषधि निर्माण का विश्वसनीय संस्थान

चर्म विकारासव सीरप

शीघ्र लाभ के लिए साथ में प्रयोग करें।

एलर्जिन कैप्सूल

गंधक रसायन, रस माणिक्य, निम्ब, दारूहरिद्रा, गिलोय, मंजिष्ठा, कुटकी, खस, खैरछाल, चिरायता आदि से परिपूर्ण रक्त विकार एवं त्वचा विकार नाशक कैप्सूल

Dose :
10-15 ml. twice a day after meal with eual quantity of water or as directed by the physician.

रक्त की उष्मा को दूर कर शरीर पर फोड़े, फुन्सियाँ, व्वचा शोथ, शीतपित्त, खुजली, लाल दाने, पानी वाले दाने, चक्ते, दाद, छाजन, सिर में खुजली, घमोरियाँ, सोरायसिस, चेहरे की काजिमा आदि को दूर करने वाला रक्त शोधक एवं व्रणशोधक।

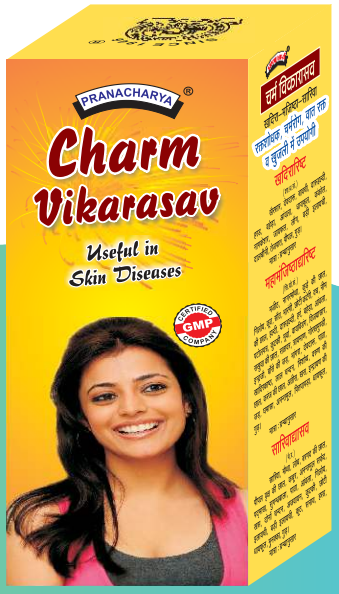

Patent Ayurvedic Medicine

एस.डी.एच सैट

स्वप्नदोष शीघ्र लाभप्रद

S.D.H Set

SDH Churan 200 gm.
SDH Capsule 20 cap.

Dose Churan:
1 Tea spoonful twice a day or as directed by the physician

Dose Capsule:
1 Capsule twice a day or as directed by the physician

पुरुषों के यौन रोग- कारण व समाधान

डा. हनुमान प्रसाद उत्तम
जन शिक्षण इण्टर कॉलेज
प्रेमपुर, बड़ागांव, कानपुर नगर- 209402

आज युवावर्ग तमाम तरह की यौन बीमारियों से ग्रसित होता है युवावर्ग में सबसे अधिक बीमारी वीर्य संबंधी पैदा हो रही है। इनके उत्पन्न होने का कारण आज की आधुनिकता का परिवेश सबसे अधिक अहम भूमिका अदा करता है। वर्तमान में हमारे देश के युवा लोग पाश्चात्य देशों की नकल में अपना सबसे अधिक समय दे रहे हैं इसी के साथ टेलीविजन में दिखाए जाने वाले अश्लील प्रोग्राम, तनाव पूर्ण जिन्दगी, आधुनिक शैली की फैशनेबिल विलासी खान-पान, रहन-सहन, आलस्य, मानसिक रूप से ग्रसित रहना, अमुक रोग के भी कुछ खास कारण हैं। जिसका प्रभाव युवाओं, पुरुषों में अनेक प्रकार की वीर्य संबंधी, बीमारियों को उत्पन्न करने में खास भूमिका निभाते हैं। युवाओं में हस्त मैथुन, स्वप्नदोष, दुर्बलता, धातु का पतला होना, लिंग की दुर्बलता, सुजाक, शीघ्रपतन, उपदंश, यौन दौर्बल्य यानि बन्ध्यत्व, शरीर का दुबला-पतला, प्रमेह तथा एड्स इत्यादि तरह की व्याधियां पैदा हो रही है।

अमुक व्याधियों के समाधान के लिए आहार-विहार में सुधार, साग-सब्जियों का अधिक मात्रा में सेवन, फल, वनस्पतियों के प्रयोग शीघ्र ही प्रारम्भ कर देने से आशातीत सफलता प्राप्त हो सकती है। हमारी सरकार को भी युवकों की यौन बीमारियों के छुटकारा पाने के लिए समुचित कदम उठाने की आवश्यकता है क्योंकि युवावर्ग देश की अमूल्य धरोहर है। सरकार को मैं एक सुझाव देना चाहता हूं कि युवाओं के शारीरिक, मानसिक विकास एवं देश के उत्थान के लिए फिल्म उद्योग तथा टेलीविजन में लोक संस्कृति, साहित्य, कला और विज्ञान पर आधारित कार्यक्रमों, युवा और किशोर की ज्ञान की वृद्धि, बालकों के मनोरंजन, महिलाओं के जागरण के दिशा में अच्छे कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाए क्योंकि आज टेलीविजन में जिस ढंग के कार्यक्रम दिखाए जाते हैं उनका सीधा प्रहार युवाओं के चरित्र पर पड़ता है। इनके मन और मस्तिष्क में वासना के विष घोलते हैं उनकी रुचि को विकृत करके समाज को गहरा आघात पहुंचा रहे हैं। टी.वी. कार्यक्रमों में सुधार हेतु राष्ट्रीय, धार्मिक और सामाजिक सिने चित्र प्रदर्शित किए जाएं। युवकों के यौन रोगों के निदान के लिए यहां पर कुछ प्रयोग प्रस्तुत किए जा रहे हैं। जिनका इस्तेमाल करके नवयुवक, पुरुष, यौन रोग से ग्रसित समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं। यौन रोगों के समाप्त होने के पश्चात वे देश सेवा में अपना सक्रिय सहयोग सही ढंग से दे सकेंगे।

- उदुम्बर (गूलर) के दुग्ध की 10-20 बूंदें बताशे अथवा छुहारे में रखकर सेवन करने से धातु पुष्टि होती है।

- यौन दुर्बलता दूर करने के लिए बला (खिरेंटी) का प्रयोग बेहतर लाभकारी सिद्ध होता है। खिरेंटी की मूल को छाया में सुखाकर चूर्ण तैयार कर रख लें, आधा चम्मच चूर्ण प्रातः सायं हल्के गर्म दूध में सेवन करना चाहिए।

– पुरुष लिंगन्द्रिय की शिथिलता आज अधिक ही देखने सुनने में आती है इस समस्या के उपचार के लिए ज्योतिष्मी का तैल, श्री गोपाल तैल, बाजीकरण तिला और अश्वगंधा तैल सभी 10-10 मिली. और लौंग का तेल 2 मिली. सबको मिश्रित कर बोतल में भर लें, रात्रि में सोने के पहले इस तैल की चार बूंदें हथेली पर लेकर अंगुलियों से, लिंग की ऊपरी त्वचा पर (अग्रभाग को छोड़कर) धीरे-धीरे सहलाएं। इससे शिथिलता समाप्त होती है।

– पुरुषों की यौन संबंधी ताकत में कमजोरी आने की अवस्था में बादाम की गिरी बहुत ही फायदेमंद साबित होती है। लगातार बादाम के सेवन से यौन संबंधी कमजोरी समाप्त होती है बादाम और भूने हुए चने बराबर मात्रा में खाने से यौन संबंधी कमजोरी दूर होती है।

– स्वप्नदोष से राहत पाने के लिए रात्रि में सोते समय तुलसी के दस-बारह पत्ते पानी के साथ लेना चाहिए।

– जिन लोगों को नारी संभोग में शर्म लगती है शीघ्र पतन हो, उन्हें अपनी लिंगेन्द्रिय में चिरौंजी के तैल की हल्की-हल्की मालिश करना चाहिए और पेडू पर भी तेल लगाएं।

– शहद वीर्य की कमियों को समाप्त करता है क्योंकि यह वीर्य को बढ़ाने वाला, शुक्र में वृद्धि तथा बलदायक है। मधु दुग्ध के साथ सेवन करने से बलवीर्य की अधिकता होती है। स्त्री सहवास के पश्चात दुग्ध में 20 ग्राम मधु मिश्रित कर इस्तेमाल करने से फायदा होता है। मधु को पुरुष लिंगेन्द्रिय पर लेप करने से भी पुष्टि प्रदान करता है।

– आतशक या गर्मी (सिफलिस), गोनोरिया (सूजाक) व्याधियों में अनन्नास का जूस ज्यादा लाभदायक होता है।

इसके प्रयोग से वीर्य का पतलापन समाप्त होता है। स्त्री विचार मात्र से ही गीलापन या मूत्र में वीर्य के स्राव में इसका प्रयोग करना कारगर साबित होता है इसमें मधु का निम्न नुस्खा फायदेमंद होता है। ईसबगोल की भूसी को महीन पीसकर मधु और बादाम में ठीक ढंग से मिश्रित कर लेने के बाद इस दवा को 3-3 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम प्रयोग करें। पुरुषों की प्रमेह व्याधि में कारगर होता है।

– 60 ग्राम चमेली के तैल में 10 ग्राम लोंग को अग्नि में जलाकर कपड़े से छानकर बोतल में भर लें रात्रि में जरा सा तैल शिश्न पर लगाकर 2 मिनट धीरे-धीरे मालिश करें कमजोर नसें अच्छी होकर ज्यादा सख्ती आ जाती है।

– विधारा बल पुष्टि, शुक्रजनन और शरीर की कमजोरी को समाप्त कर शरीर में वृद्धि करता है। विधारा की मूल को सुखाकर कूट पीसकर 3-6 ग्राम की मात्रा को दुग्ध के साथ प्रयोग करने से तन की कमजोरी, मेघा शक्ति की कमजोरी दूर होती है।

– प्रमेह से छुटकारा पाने के लिए श्वेत चन्दन को घिसकर मधु मिश्री के साथ चावल के धोवन मिलाकर सेवन करने से जल्द ही आराम मिलना प्रारम्भ हो जाता है।

– आतशक (सिफलिस) और सूजाक (गोनोरिया) में करंज की मूल का स्वरस 3 ग्राम नारियल का दुग्ध व चूने के जल में मिश्रित कर पान करने से तुरन्त राहत मिलती है।

– सुजाक रोग में पीपल के पेड की कोपलों को दूध में पकाकर देने से जल्दी ही फायदा होता है।

– प्रमेह में पीपल के वृक्ष की छाल और फल का प्रयोग लाभप्रद है। अनन्नास के रस में कालानमक का समभाग चूर्ण थोड़ा सा पानी मिलाकर रोजाना सुबह-शाम पीने से कुछ ही दिनों में प्रमेह रोग की शिकायत समाप्त हो जाती है।

– जायफल का चूर्ण तम्बूल या मधु के साथ मिलाकर इस्तेमाल करने से प्रमेह व्याधि समाप्त हो जाती है और ताकत पैदा होती है।

– कोंच बलकारक, शक्तिवर्धक, धातुवर्धक एवं रसायन की भांति सेवन किया जाता है। कौंच के एक किलो बीज, चार लीटर दुग्ध में तब तक उबालें जब तक मसलने पर उसका छिलका न हट जाए, उपरोक्त जहरीले दुग्ध को तो किसी गढ्ढे में फेंक दें, और कौंच के छिलके उतारकर गिरी सुखाकर बारीक चूर्ण तैयार कर लें। इस चूर्ण को आधा चम्मच की मात्रा में प्रयोग कर प्रारम्भ कर तथा चार चम्मच मात्रा तक बढ़ाकर ले जाएं। चूर्ण सुबह खाली पेट निराहार मुख और रात में भोजन के 3 घंटे पश्चात लगातार कुछ दिनों तक एक-एक गिलास दुग्ध के साथ लेना है। दुग्ध में पाचन क्षमता के अनुसार शुद्ध घृत भी मिलाएं। यह बलपुष्टि, वीर्यवर्द्धक औषधि है जिसको प्रतिदिन प्रयोग करने से नष्ट हुई कामशक्ति पुनः निश्चित ही वापिस आ जाती है।

– बेल के गूदे में जो गोंद होता है वह वीर्यवर्धक और बलदायक होता है।

– केला प्रमेह में लाभकारी है अतः इसका सेवन करना चाहिये।

– पिस्ते की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसके अन्दर विटामिन ई प्रचुर मात्रा में होती है इसकी वजह से पुरुष के वीर्य में बहुत वृद्धि होती है।

– आंवला वीर्य विकारों के लिए रामबाण औषधि है। आंवलों का स्वरस 25 ग्राम और 25 ग्राम चीनी मिश्रित कर पीने से पुरुष का वीर्य अधिक बलशाली बनता है। शरीर में ताकत आती है। खून साफ होता है। और समस्त विकारों जैसे स्वप्नदोष, शीघ्रपतन आदि व्याधियां नष्ट होती हैं। लहशुन शुक्र को बढ़ाने वाला होता है।

– पुरुषों के वीर्य की दुर्बलता को दूर करने के लिए 30 दिन तक प्याज के रस का प्रयोग करना चाहिये। इसके सेवन से पुरुषों की नामर्दी और यौन शक्ति की दुर्बलता में कारगर फायदा होता है। साथ ही शरीर बलशाली एवं हृष्ट-पुष्ट बनता है।

– मर्दाना कमी को दूर करने के लिए गाजर एक अच्छी वस्तु है। एक किलो गाजर को पानी से साफकर कद्दूकस में घिस लें, तब 4 किलो दूध में पका लें जब दुग्ध खत्म हो जाए तो 250 ग्राम देशी घृत और 10 अण्डे की जर्दी डालकर भून लें, प्रतिदिन 50 ग्राम सेवन कर ऊपर से दुग्ध का पान। 30 दिन तक प्रयोग करने शरीर में नवजीवन और शरीर शक्तिशाली तथा वीर्य से परिपूर्ण होगा।

SHILAJIT
FOR POWER

ASHWAGANDHA
FOR ENERGY

KESAR
FOR STRENGTH

SWRAN BHASM
FOR STAMINA

SAFED MUSALI
FOR COUNTER WEAKNESS

अर्दित यानि चेहरे का लकवा

(कारण, लक्षण व उपचार)

डा. अर्चना गुप्ता
5/11 बाग कूंचा, फर्रुखाबाद (उ.प्र.)

आचार्य सुश्रुत ने इस रोग को मुख मंण्डल तक ही सीमित माना है। इसमें आंख, नाक, कान, मस्तक, ओष्ठ, हनु तथा दांतों में विशेष विकृति होती है। चक्रपाणि के अनुसार यह रोग स्थाई रूप से नहीं होता है। बल्कि समय-समय पर इसके दौरे पड़ते रहते हैं।

अर्दित रोग के कारण

सुश्रुत ने इसके कारण इस प्रकार बतलाएं हैं-

उच्चैर्व्याहरतोऽयर्थ खादतः कठिनानि वा।
हंसतो जृम्भतो वाऽपि भाराद्विषमशायिनः।।44।।

(सु.नि.1)

अर्थात् मुख्य कारण ये हैं-

- ऊंचे स्वर में बोलना।
- कड़े पदार्थों का खाना।
- जोर से हंसना।
- जम्भाई लेना।
- अधिक भार उठाना।

इन सब कारणों से कुपित हुई वात शिर, नासिका, ओंठ, हनु तथा नेत्र संधियों को आक्रान्त करके अर्दित रोग को उत्पन्न करता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान सातवीं वक्त्र नाड़ी में हुई विकृति को इसका कारण मानता है।

अर्दित रोग के लक्षण :

- इसमें मुख का आधा भाग टेढ़ा हो जाता है।
- गर्दन मुड़ जाती है तथा सिर हिलने लगता है।
- बोलने में परेशानी होती है।

आंखों, गर्दन, नासिका, हनु एवं दांतों में विकृति आ जाती है।

यदि रोगी से मुंह फुलाने के लिए कहा जाए तो विकृत गाल अधिक फूल जाएगा।

रोगी सीटी नहीं बजा पाता है।

चेहरे के विकृत भाग की आंख सोते समय भी खुली रहती है।

विकृत भाग में खाना दांतों और गालों के बीच एकत्र हो जाता है।

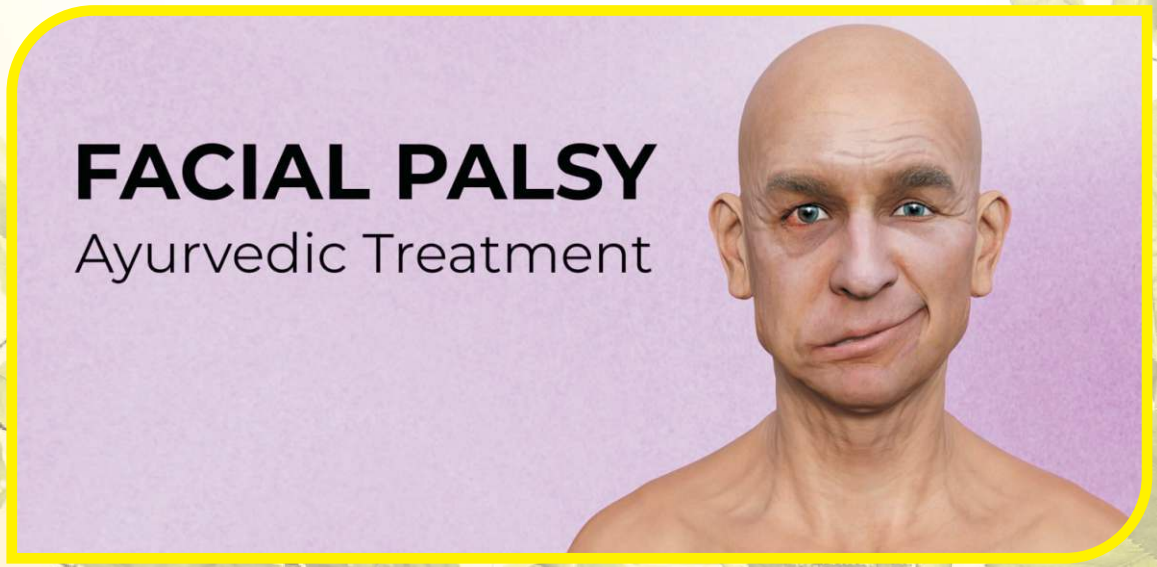

अर्दित रोग का उपचार –

रोगी को ठण्डी वस्तुयें जैसे मूली, दही, गोभी, ठण्डे पेय पदार्थों एवं बर्फ के पानी आदि से परहेज करना चाहिये। ठण्डे स्थानों पर नहीं जाना चाहिये। ठण्डी हवा लगने से खुद को बचाना चाहिये। गर्म जल से स्नान करना चाहिये। वत बढ़ाने वाली वस्तुओं को त्याग देना चाहिये। लहशुन आदि वात नाशक वस्तुओं का सेवन करना चाहिये।

खंजनकारि रस 120 मिग्रा. की मात्रा में दूध के साथ सुबह व रात्रि को सोते समय दें।

अश्वगंधारिष्ट और रसौन सुरा 15–15 मिली की मात्रा में मिलाकर, समान भाग जल से भोजन के बाद सुबह–शाम अर्दित से पीड़ित रोगी को दें।

स्वर्ण समीर पन्नग रस 120 मिग्रा. की मात्रा में एरण्डमूल क्वाथ के साथ सुबह–शाम देने से अच्छा लाभ मिलता है।

वातकुलान्तक रस 120 मिग्रा पंचामृत लोह गुग्गुल 1/2 ग्राम मिलाकर सुबह–शाम सेवन करें।

अमर सुन्दर वटी, विषमुष्टियादि वटी, एरण्डपाक, एकांगवीर रस, चिन्तामणि चतुर्मुख रस, जीर्ण ज्वरांकुश रस, वात चिन्तामणि रस, वातकुलान्तक रस, महालक्ष्मी विलास रस, योगेन्द्र रस, रसराज रस एवं लक्ष्मीनारायण रस आदि भी अर्दित रोग के लिए बहुत अच्छी औषधियां हैं। इनमें से कुछ औषधियों का चुनाव करके अर्दित रोग से पीड़ित व्यक्ति को सेवन कराना चाहिये।

महायोग राज गुग्गुल की दो–दो गोलियों का सुबह–शाम गुनगुने जल से सेवन कराने से भी अच्छा लाभ मिलता है।

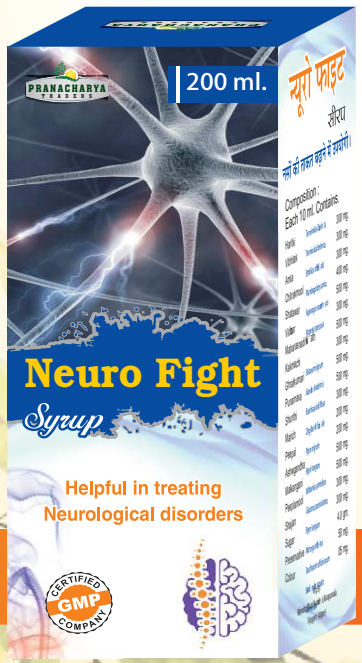

न्यूरोफाइट

सीरप व कैप्सूल

नसों की ताकत बढ़ाने में उपयोगी

Helpful In Treating

Neurological Disorders

अमृत समागम 2023 (लखनऊ)

अमृत समागम 2023 लखनऊ में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आयुर्वेदिक कार्यक्रम में प्राणाचार्य भवन आयुर्वेदिक संस्थान को आयुर्वेद की सेवा (77 वर्ष) में उत्ष्ट योगदान के लिए Medical Marvel Award of The Year 2023 से सम्मानित किया गया. यह कार्यक्रम 16,17 सितंबर को हुआ ,वैद्य नीरज गोयल जी , वैद्य शशांक अग्रवाल जी ने इस कार्यक्रम में भाग लिया, कार्यक्रम में आयुर्वेद के प्रख्यात लोग ,श्री मनीष आचार्य जी (HIMS), श्री अभिषेक गुप्ता जी (Nirogstreet & AFI Founder), वैद्य तपन कुमार जी , डश्र.प्रताप चौहान जी (Jiva), वैद्य नवीन जोशी जी , वैद्य प्रशांत तिवारी जी (Dharma Ayurved), श्री विशाल गुप्ता जी (Gyno veda), वैद्य संजय भोई जी , डा. रोहित माधव साने जी (Madhav Baug), डा. संचित शर्मा जी (Aimil MD) आदि गणमान्य उपस्थित रहे ।

प्राणाचार्य भवन आयुर्वेदिक संस्थान जी.एम.पी. सर्टिफिकेशन 2023

प्राणाचार्य® शास्त्रोक्त एवं पेटेण्ट आयुर्वेदिक औषधि निर्माण का विश्वसनीय संस्थान

आर्टी क्लीन

100% Natural Product

Apple cider Vinegar with Natural Ginger juice, Natural Garlic Juice, Honey and Natural Lemon Juice

NO ARTIFICIAL COLOUR | NO ARTIFICIAL FLAVOR | 100% CHEMICAL FREE

Arteclean is useful for

- Helps in lowering cholesterol,
- Regulates the pH of your skin.
- Aids in weight loss.
- Balance your entire inner body system
- Help you to detox.
- Is great for your lymphatic system.
- Cuts down on Night time leg cramps.
- Boosts energy.
- Clear acne.
- Prevents indigestion.
- Helps tummy troubles.
- Contains antioxidants, vitamins, minerals.
- enzymes that boost immunity.

Direction of usage

10-15ml. twice a day before meals.
To be taken diluted in a cup (150 ml.) of hot water.
Or as directed by a Health professional.
Caution : Children below 12 years, pregnant Ladies and persons having any serious medical conditions
should taken under medical supervision only.

शिला अमृत कैपसूल गोल्ड

Boost Your Stamina

Shila Amrit Capsule Gold

शारीरिक व मानसिक दुर्बलता में लाभदायक, बल, वीर्य व रक्तवर्धक